बाइबल अध्ययन 1: प्रकाश

आरंभ में चारों ओर केवल अंधकार और अव्यवस्था का साम्राज्य था। परन्तु उस अंधकार, उस अव्यवस्था में भी 'ईश्वर की चेतना' का विचरण हो रहा था। और वह चेतना विचरती और प्रतीक्षा करती रही··· प्रतीक्षा करती रही··· करती रही... और तब परमेश्वर की वाणी गुंजार उठी: "प्रकाश हो जाए···!" परमेश्वर की उस आज्ञा से प्राकृतिक प्रकाश का जन्म हुआ, एक शुभ प्रकाश का!

प्रकृति में प्रकाश का काम है स्वयं और अपने आस-पास की सब चीजों को प्रकट करना। जब सुबह में सूरज उगता है तो आप केवल सूरज को देख सकते हैं। और तब आप देखते हैं कि कैसे वह रोशनी आस-पास की सभी वस्तुओं को प्रकट कर देती है। प्राकृतिक जीवन की यही सच्चाई आध्यात्मिक दुनिया में भी लागू होती है क्योंकि ईश्वर ने ही सभी चीजों की रचना की है।

1. सच्चा आध्यात्मिक प्रकाश कौन है? *पढ़ें: जॉन 8:12, जॉन 1:1-5, जॉन 1:14* और *हीब्रूज 1:2-3.*

2. उसने हमारे सामने किसे प्रकट किया? पढ़ें *2 कोरैंथियन्स 4:6, मैथ्यू 11:27, जॉन 14:6-7, जॉन 12:44-46* एवं *जॉन 13:20.*

3. मेरे जीवन के लिए इसका क्या अर्थ है? ग्यारह चीजों की सूची बनाएं। *पढ़ें जॉन 1:12-13, जॉन 8:12, जॉन 17:1-5, जॉन 3:16-18, रोमन्स 6:22-23, रोमन्स 8:15-16, गैलेटियन्स 4:6-7, 1 जॉन 1:7, 1 जॉन 2:1-2* और कॉलोसियन्स *1:12-23.*

प्राकृतिक जीवन में, जब आप प्रकाश से दूर जाते हैं तो आप अपनी ही छाया के अंधकार की ओर जा रहे होते हैं। प्राकृतिक जीवन की यही सच्चाई आध्यात्मिक दुनिया में भी लागू होती है क्योंकि ईश्वर ने ही सभी चीजों की रचना की है।

आध्यात्मिक जीवन में, जब आप प्रभु यीशु से दूर भागते हैं या उनकी ओर से अपनी आंखें मोड़कर अपनी ओर उन्मुख होते हैं तो आप आध्यात्मिक रूप से अंधकार की छाया में आ जाते हैं।

आप किस दिशा में चल रहे हैं और क्या सोच रहे हैं – इससे यह तय होगा कि आपके जीवन में **कहां अंधकार** और **कहां प्रकाश फैलेगा**।

4. आध्यात्मिक रूप से अंधकार क्या है? पढ़ें *ऐक्ट्स 26:18, प्रोवर्ब्स 4:19, जॉन 3:19-21, इफीसियन्स 6:12, 1 जॉन 1:6, 1 जॉन 2:9-11* और *ज्यूड 1:4.*

5. यदि आप प्रभु यीशु रूपी दिव्य प्रकाश को जानते हों तो भी क्या आप आध्यात्मिक रूप से दृष्टिहीन हो सकते हैं? पढ़ें *2 पीटर 1:5-9.*

6. आप किस तरह प्रकाश में चलते हैं? पढ़ें *हीब्रूज 12:2-3, साम 119:105, मैथ्यू 4:4, मैथ्यू 6:33, इफीसियन्स 5:8-21* और *रोमन्स 13:12-14.*

7. प्रकाश-कवच के 6 अंग कौन-कौन से हैं? पढ़ें *इफीसियन्स 6:10-17.*

प्राकृतिक जीवन में, प्रकाश अंधकार से ज्यादा शक्तिशाली होता है। प्रकाश अंधकार को दूर कर देता है। प्राकृतिक जीवन की यही सच्चाई आध्यात्मिक दुनिया में भी लागू होती है क्योंकि ईश्वर ने ही सभी चीजों की रचना की है।

8. प्रभु यीशु जो कि दिव्य प्रकाश और अनन्तता के स्वामी हैं, उन्हें अंधकार को वश में करने की शक्ति हासिल है। ऐसी 11 चीजों के नाम लिखें जिस पर यीशु को शक्ति और अधिकार प्राप्त है।

मैथ्यू 9:35

मैथ्यू 8:23-27

ल्यूक 5:18-26

ल्यूक 4:33-36

रीवलेशन 1:17-18

जॉन 10:17-18

मैथ्यू 28:18

रीवलेशन 1:5

1 पीटर 3:22

केवल प्रभु यीशु ही आपको अंधकार के चंगुल से मुक्त कर सकते हैं।

उत्तर

1. प्रभु यीशु।

2. प्रभु यीशु स्वयं, परमेश्वर के पुत्र एवं अनन्तता के स्वामी तथा परमपिता परमेश्वर।

3. ईश्वर का पुत्र होना, अंधकार से बचना, प्रकाशित जीवन जीना, अनन्त जीवन प्राप्त करना, पाप से मुक्त होना, पवित्र बनना, प्रभु यीशु के साथ संयुक्त उत्तराधिकारी बनना, एक-दूसरे के साथ बन्धुता, पापहीनता, अंधकार के साम्राज्य से मुक्त होकर प्रकाश एवं पापों से क्षमा के साम्राज्य में प्रवेश करना।

4. हां, यदि आप अभी भी अंधकार में जी रहे हों और प्रभु यीशु के लिए भी जी रहे हों।

5. शैतान की शक्ति, दुष्टों के तौर-तरीके, दुष्टता की आध्यात्मिक शक्तियां, ईश्वर-विमुखता एवं प्रभु यीशु को दिव्य प्रकाश मानने से इन्कार करना।

6. प्रभु यीशु की ओर देखना, ईश्वरीय शब्द (पवित्र बाइबल) को पढ़ना, अंधकारमय कार्यों से बचना, प्रकाश का कवच धारण करना और प्रभु यीशु को अपने इतने करीब रखना जितना कि आपके वस्त्र।

7. सच्चाई की कमरबंद, सच्चरित्रता का कवच, शांति के प्रभु-वाक्य का पदत्राण, निष्ठा की ढाल, मुक्ति का सिरस्त्राण और ईश्वरीय वाणी रूपी तलवार से सुसज्जित होना।

8. सभी रोगों से आरोग्य देने की शक्ति। रोग-ब्याधियों पर नियंत्रण करने की शक्ति। सभी जीवों, हवा और समुद्र पर शासन। पापों को क्षमा करने की शक्ति। दुष्ट एवं अपवित्र शक्तियों पर नियंत्रण। मृत्यु को वश में करने की शक्ति। अपने भाग्य पर नियंत्रण। स्वर्ग और धरती पर प्राधिकार। सभी राजाओं के भी राजाधिराज, दुष्टता पर शक्ति। देवदूतों पर शक्ति, सभी प्राधिकार एवं समस्त शक्तियां।

बाइबल अध्ययन 2: जल

अति प्राचीन समय में, जब ईश्वर ने प्रकाश की रचना की, तो उन्होंने यह आदेश दिया "ऊपर आकाश और नीचे पानी को अलग करते हुए जल उत्पन्न हो जाए!" ईश्वर ने कहा और ऐसा हो गया।

प्राकृतिक जीवन में, परमेश्वर ने पानी को अलग करके एक अलग ही किस्म का जल बनाया और उसे आकाश का नाम दिया। प्राकृतिक जीवन की यही सच्चाई आध्यात्मिक दुनिया में भी लागू होती है क्योंकि ईश्वर ने ही सभी चीजों की रचना की है। आध्यात्मिक जगत में, ईश्वर ने अपने लोगों को संसार की बुराइयों से अलग किया।

1. प्रभु यीशु के अन्दर आप क्या हैं? पढ़ें *कोरैंथियन्स 5:17-18.*

_____

2. मेरे जीवन के लिए इसका क्या अर्थ है?

गैलेटियन्स 4:6-7 _____

1 कोरैंथियन्स 6:19-20 _____

इफीसियन्स 4:21 _____

इफीसियन्स 4:22 _____

इफीसियन्स 4:23 _____

इफीसियन्स 4:24 _____

इफीसियन्स 4:25 _____

इफीसियन्स 4:26 _____

इफीसियन्स 4:27 _____

इफीसियन्स 4:28 _____

इफीसियन्स 4:29 _____

इफीसियन्स 4:30 _____

इफीसियन्स 4:31 _____

इफीसियन्स 4:32 _____

प्राकृतिक जीवन में, पानी जीवन के लिए आवश्यक है। प्राकृतिक जीवन की यही सच्चाई आध्यात्मिक दुनिया में भी लागू होती है क्योंकि ईश्वर ने ही सभी चीजों की रचना की है। आध्यात्मिक दुनिया में भी हमारे आध्यात्मिक जीवन और विकास के लिए 'जीवन्त जल' आवश्यक है।

3. 'जीवन्त जल' क्या है? पढ़ें *जॉन 7:37-39.*

---

4. यह 'जीवन्त जल' हमें क्या देता है? पढ़ें *जॉन 6:63, 1 पीटर 3:18, साम 36:9, रोमन्स 8:11 2 कोरैंथियन्स 3:6 और 3:17.*

---

5. हमें 'जीवन्त जल' की ओर कौन ले जाता है? पढ़ें *जॉन 4:10-13* और *रीवलेशन 7:17.*

प्राकृतिक जीवन में, जल ऊंचाई से निचाई की ओर बहता है, आकाश से नीचे, पहाड़ों से नीचे, नदियों में, तालाब या जलाशयों में। प्राकृतिक जीवन की यही सच्चाई आध्यात्मिक दुनिया में भी लागू होती है क्योंकि ईश्वर ने ही सभी चीजों की रचना की है। आध्यात्मिक जीवन में, पवित्र चेतना रूपी जीवन्त जल, प्रभु यीशु के माध्यम से, उनके लोगों तक प्रवाहित होता है।

6. यह 'जीवन्त जल' कहां से आता है? पढ़ें *रीवलेशन 22:1* और *इज़ैकिएल 47:1-2.*

प्राकृतिक जीवन में, प्रवाहित जल के अन्दर शक्ति उत्पन्न करने की क्षमता होती है। प्राकृतिक जीवन की यही सच्चाई आध्यात्मिक दुनिया में भी लागू होती है क्योंकि ईश्वर ने ही सभी चीजों की रचना की है। आध्यात्मिक जीवन में, जब हम पवित्र चेतना को ईश्वरीय उद्देश्य से अपने अन्दर से प्रवाहित होने देते हैं तो हमें ईश्वर के लिए जीवन जीने की शक्ति प्राप्त होती है।

7. हमें क्या करने के लिए शक्ति प्राप्त होती है? पढ़ें *ऐक्ट्स 1:8, ऐक्ट्स 4:33* और *ऐक्ट्स 6:8.*

---

8. पवित्र चेतना द्वारा किए जाने वाले ग्यारह कार्य क्या-क्या हैं?

जॉन 16:13 _____

जॉन 14:26 _____

जॉन 15:26 _____

जॉन 16:7-11 _____

रोमन्स 8:16-17 _____

रोमन्स 8:26-27 _____

2 कोरैंथियन्स 3:16 _____

1 कोरैंथियन्स 2:12-13 _____

1 कोरैंथियन्स 3:16 _____

रोमन्स 8:11 _____

इफीसियन्स 3:16 _____

9. पवित्र चेतना के कुछ 'उपहार' क्या-क्या हैं? पढ़ें *1 कोरैंथियन्स 12:4-11.*

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

10. पवित्र चेतना के कुछ नाम बताएं। पढ़ें *इसाइया 11:2,*
जॉन 14:16-17, हीब्रूज 9:14, ल्यूके 1:35, इफीसियन्स 1:13,
रोमन्स 8:15, 1 पीटर 1:11, 1 पीटर 4:14, जेनेसिस 1:2, रोमन्स 1:4,
रोमन्स 8:2, इसाइया 61:1, मैथ्यू 10:20 और *गैलेटियन्स 4:6.*

11. पवित्र चेतना किसे प्राप्त हो सकती है? पढ़ें *रीवलेशन 22:17, ल्यूक 11:13,*
ऐक्ट्स 10:44, ऐक्ट्स 2:33 और *ऐक्ट्स 5:32.*

12. वह क्या चीज है जो पवित्र चेतना की शक्ति को सक्रिय बना सकती है? पढ़ें *जेम्स 5:15-18.*

उत्तर

1. नई सृष्टि
2. पाप से मुक्ति और मैं जीवन्त परमेश्वर – उस पवित्र चेतना – का मन्दिर बनता हूं, मैं स्वयं अपना नहीं बल्कि ईश्वर का हूं, ईश्वर से दूर नहीं भटकना, ईश्वर से दीक्षा पाने के बाद अपने भीतर के पुराने इन्सान को दूर हटाना, नए दिलो-दिमाग के साथ एक नया इन्सान बनना, सच बोलना और क्रोध से बचना, शैतान को कोई स्थान न देना, चोरी न करना, केवल अच्छी बातें बोलना, पवित्र चेतना को दुखी न करना, हर प्रकार की कटुता, आक्रोश, क्रोध, झगड़े-झंझट, दूसरों पर लांछना लगाने तथा हर प्रकार की ईर्ष्या इत्यादि से बचना और दूसरों के प्रति दयालु बनना।
3. पवित्र चेतना
4. जीवन, हम जीवन्त हो उठते हैं और पापों से मुक्त होते हैं।
5. प्रभु यीशु
6. ईश्वरीय सिंहासन।
7. प्रभु यीशु का साक्षी बनने के लिए।
8. सर्वसत्य की ओर ले जाना, प्रभु यीशु का प्रमाण स्थापित करना, संसार को पापों से मुक्त करना, प्रभु यीशु के श्रद्धालुओं के लिए सच्चरित्रता और दुष्टों के लिए अन्तिम निर्णय देना, मार्गदर्शित करना, प्रभु यीशु की गरिमा स्थापित करना, प्रभु यीशु को इस संसार में विख्यात करना, यह प्रमाणित करना कि हम ईश्वर की सन्तान और यीशु के साथ ईश्वरीय साम्राज्य के उत्तराधिकारी हैं, वह (पवित्र चेतना) हमें मदद देती और हमारे कार्यों में सकारात्मक हस्तक्षेप करती है, पर्दों को हटाती है, हमें शिक्षा देती है, हमारे मन में निवास करती है, हमारे नाशवान शरीर में जीवन का संचार करती और उसे शक्ति देती है।
9. विवेक का संदेश, ज्ञान का संदेश, आस्था, आरोग्य, विलक्षण शक्तियां, भविष्यवाणी, चेतनाओं के बीच विभेद, विभिन्न भाषाओं में बोलना और भाषाओं का अर्थांतरण करना।
10. **प्रभु** की चेतना, विवेक-बुद्धि की चेतना, परामर्श और शक्ति की चेतना, ज्ञान की चेतना, सहायक, सत्य की चेतना, अनन्त चेतना, सर्वोच्च की शक्ति, पवित्र चेतना, स्वीकृति की चेतना, यीशु की चेतना, गरिमा की चेतना, परमेश्वर की चेतना, पावनता की चेतना, जीवन की चेतना, परमपिता की चेतना, और प्रभुपुत्र की चेतना।
11. जो कोई भी उसके लिए प्यासा हो, जो कोई उसकी याचना करे, जो कोई उस पावन शब्द को सुने, जो कोई भी प्रायश्चित करे और प्रभु यीशु के नाम में दीक्षित और उनमें आस्था रखने वाला हो।
12. आस्था के साथ की गई प्रार्थना।

बाइबल अध्ययन 3: फल

अत्यंत प्राचीन समय में, प्रकाश की रचना करने और जल को यह आदेश देने के बाद कि वह ऊपर आकाश और नीचे पानी को अलग कर दे, परमेश्वर ने कहा: "अब यह धरती वनस्पतियों को उत्पन करे: बीज से भरे पेड़-पौधों को और वे अपनी-अपनी तरह के बीज भरे फलों को उत्पन्न करें"। और ऐसा ही हुआ... और ईश्वर ने उन्हें शुभ माना।

प्राकृतिक जीवन में, स्वस्थ एवं फलदार लताओं को पर्याप्त पानी चाहिए। प्राकृतिक जीवन की यही सच्चाई आध्यात्मिक दुनिया में भी लागू होती है क्योंकि ईश्वर ने ही सभी चीजों की रचना की है। आध्यात्मिक जगत में, प्रभु यीशु *जीवन्त* जल (पवित्र चेतना) के स्रोत हैं। उनकी *ओर से* प्रवाहित होते हुए यह स्वाभाविक रूप से हमारे *माध्यम* से भी प्रवाहित होता है।

1. सच्चा पौधा कौन है और माली कौन है? पढ़ें *जॉन 15:1-2.*

_____

2. आध्यात्मिक फल क्या है और परमेश्वर की विशेषताएं क्या हैं? पढ़ें *गैलेटियन्स 5:22-23, इफीसियन्स 5:9, 2 पीटर 1:3-7, रोमन्स 6:22, फिलिपियन्स 1:11* और *जेम्स 3:17-18.*

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

_____

3. आध्यात्मिक फल का 'स्रोत' क्या है? पढ़ें *इज़ैकिएल 47:12*

---

4. हम फल कैसे उत्पन्न करते हैं? पढ़ें *जॉन 15:3-5, हीब्रूज 12:2-3, साम 92:13-14, मैथ्यू 13:23, हीब्रूज 10:22* और *1 जॉन 2:6.*

प्राकृतिक जीवन में, एक स्वस्थ लता को पनपने के लिए उसे अच्छे, उपजाऊ और नर्म भूमि में रोपा जाना जरूरी है। प्राकृतिक जीवन की यही सच्चाई आध्यात्मिक दुनिया में भी लागू होती है क्योंकि ईश्वर ने ही सभी चीजों की रचना की है। आध्यात्मिक जीवन में, प्रभु यीशु अच्छी भूमि की तुलना हमारे हृदय की दशा और आध्यत्मिक शिक्षा ग्रहण करने की चेतना से करते हैं।

5. बाइबल (ईश्वर की वाणी) के अनुसार, आध्यात्मिक अर्थ में बीज क्या है और भूमि क्या है? पढ़ें *मैथ्यू 13:18-23* और *1 पीटर 1:23.*

---

6. हम आध्यात्मिक रूप से कैसे विकास करते हैं? पढ़ें *इफीसियन्स 6:18, मैथ्यू 4:4* और *जॉन 4:23.*

आध्यात्मिक जीवन में, यीशु हमारे भोजन के स्रोत हैं। वे जीवन की रोटी हैं, परमेश्वर की वाणी हैं। जब हम ईश्वर की वाटिका में रहते हैं तो हम वे ही आहार ग्रहण कर रहे होते हैं जो कि प्रभु यीशु।

7. प्रभु यीशु का भोजन क्या था? पढ़ें *जॉन 4:34.*

---

8. परमपिता की इच्छा क्या है? *ल्यूक 4:18-19.*

---

9. आप सच्चे पौधे से जुड़ी हुई एक शाखा हैं। उससे जुड़कर आप पौधे की सभी अच्छाइयों को ग्रहण कर रहे हैं। उस पौधे का नाम प्रभु यीशु है। यीशु को दिए गए कुछ अन्य नाम क्या हैं?

जॉन 1:1 _____

जॉन 11:25 _____

रीवलेशन 1:5 _____

कोशियन्स 1:27 _____

2 कोरिनथियान्स 4:4 _____

1 तीमोथी 6:15 _____

जॉन 14:6 _____

जॉब 19:25 _____

रोमांस 11:26 _____

रीवलेशन 19:11 _____

रीवलेशन 19:13 _____

इसाईयह 40:5 _____

रीवलेशन 22:16 _____

यहूदी 12:1-2 _____

रीवलेशन 1:8 _____

जॉन 1:3 _____

मैथ्यू 2:15 _____

इसाईयह 9:6 _____

रीवलेशन 1:17 _____

उत्तर:

1. प्रभु यीशु ही सच्चे पौधे हैं और परमपिता परमेश्वर माली हैं।
2. प्यार, आनन्द, शांति, चिरन्तन कष्ट, दयालुता, निष्ठा, सौम्यता, आत्म-संयम, अच्छाई, सच्चरित्रता, सत्य, निष्ठा, सद्गुण, ज्ञान, अध्यवसाय, देवत्व, बंधुत्व और स्नेह, तथा पवित्रता।
3. जल, जीवन्त जल, पवित्र चेतना
4. प्रभु यीशु में निवास करना, परमेश्वर की बगिया में रोपे गए प्रभु यीशु की ओर देखना, ईश्वरीय वाणी को सुनना और समझना, सच्चे हृदय से ईश्वर के निकट आना, और प्रभु यीशु के बताए मार्ग पर चलना।
5. परमेश्वर के साम्राज्य की वाणी बीज है और भूमि व्यक्ति का हृदय है।
6. पूरी चेतना से प्रार्थना करना, ईश्वरीय वाणी के अनुसार जीवन जीना तथा चेतना और सत्यता के स्वरूप परमेश्वर की आराधना करना।
7. ईश्वरीय इच्छा का पालन करना।
8. गरीबों को सुसमाचार सुनाना, कैदियों के लिए मुक्ति और नेत्रहीनों के लिए दृष्टि की घोषणा करना, सताए हुए लोगों को मुक्ति देना और प्रभु-करुणा के वर्ष की उद्घोषणा करना।
9. परम वाणी, जीवन और पुनर्जीवन, मृत्युजयी, गरिमा की आशा, परमेश्वर के प्रतिबिंब, राजाधिराज एवं स्वामियों के स्वामी, मार्ग, सत्य और जीवन, मुक्तिदाता, कष्ट-निवारक, सच्चे और निष्ठावान, परमेश्वर के शब्द, प्रभु की महिमा, सुबह के प्रखर नक्षत्र, सृजनकर्ता एवं आस्था के परिपूरक, उद्गम और समापन, आदि और अंत, सर्जक, परमेश्वर के पुत्र, सर्वशक्तिमान, अनुपम परामर्शदाता, शांति के राजकुमार तथा प्रथम और अन्तिम।

बाइबल अध्ययन 4: सितारे

बहुत प्राचीन काल में, जब ईश्वर ने प्रकाश, जल, आकाश, धरती, बीजों, पौधों, लताओं और पलों की रचना की .... तो ईश्वर ने कहा: "दिन और रात को अलग करने के लिए, आकाश के विस्तार में असंख्य रोशनियां हो जाएं और वे ऋतुओं तथा दिनों और वर्षों के संकेत बन जाएं और धरती पर प्रकाश देने के लिए आकाश के विस्तार में उजाले फैल जाएं।" और ऐसा ही हुआ।

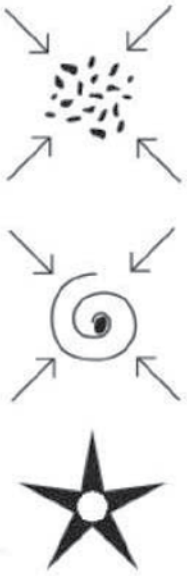

प्राकृतिक जीवन में, तारे की रचना धूल के गुब्बार से होती है, यह बहुत ही दबाव के कारण घूमता है, ऊर्जा का जन्म होता है और एक नाभिकीय (केन्द्र) बन जाता है और अधिक दबाव पड़ने से अंधेरे में रोशनी की किरणें फूट पड़ती हैं। प्राकृतिक जीवन की यही सच्चाई आध्यात्मिक दुनिया में भी लागू होती है क्योंकि ईश्वर ने ही सभी चीजों की रचना की है।

आध्यात्मिक अर्थ में, चमकने की शक्ति हमारे हृदय के केन्द्र से आती है। हमारे प्रकाश के स्रोत हैं प्रभु यीशु मसीह। हम जो भी करते हैं या हम जो भी हैं वह हमारे हृदय की अवस्था के कारण है।

1. हमारे हृदय से क्या बाहर आता है? पढ़ें *ल्यूक 6:45, प्रोवर्ब्स 4:23* और *रोमन्स 10:10.*

2. हम अपने हृदय को शुद्ध कैसे बना सकते हैं? पढ़ें *साम 51:10, हीब्रूज 10:10* और *हीब्रूज 10:19-22.*

3. साफ दिल वाले व्यक्ति के लिए क्या वचन दिया गया है? पढ़ें *मैथ्यू 5:8.*

प्राकृतिक जगत में, किसी सितारे की रचना अत्यंत दबाव की स्थिति में होती है। दबाव के बिना प्रकाश संभव नहीं है। प्राकृतिक जीवन की यही सच्चाई आध्यात्मिक दुनिया में भी लागू होती है क्योंकि ईश्वर ने ही सभी चीजों की रचना की है।

आध्यात्मिक दृष्टि से, हम यातनाएं और अनेक कष्टों के दौर से गुजरते हुए भी प्रकाशित और आनन्दित अवस्था में रह सकते हैं!

पॉल ने 'फिलिपियन्स' पुस्तक की रचना तब की जब वे कारागार में थे, उन्हें ईश्वरीय वाणी का प्रसार करने के लिए यातनाएं दी जा रही थीं। यह जानते हुए भी कि उन्हें मृत्युदंड दिया जा सकता है, वे हमें आनन्द मनाने को कहते हैं! *फिलिपियन्स 2:17*

4. कष्टों के दौर में भी हमें क्या करना चाहिए? पढ़ें *फिलिपियन्स 1:27-28, फिलिपियन्स 4: 4-8, 1 पीटर 1:3-9, 1 पीटर 3:13-15* और *1 पीटर 4:16-19.*

5. हमारे आनन्द का स्रोत कौन है? पढ़ें *नेहेमिया 8:10* और *इसाइया 40:28-31.*

प्राकृतिक जीवन में, लोग तारों की मदद से अपना रास्ता खोजते हैं। प्राकृतिक जीवन की यही सच्चाई आध्यात्मिक दुनिया में भी लागू होती है क्योंकि ईश्वर ने ही सभी चीजों की रचना की है।

आध्यात्मिक रूप से, हम उन सितारों की तरह हैं जो अपने कार्यों, अपनी वाणी और आचरण के माध्यम से लोगों को प्रभु यीशु के मार्ग की ओर संकेतित करते हैं।

6. इस विश्व के अंधकार में हम किस तरह अपनी चमक बिखेरते हैं? पढ़ें *साम 34:5, हीब्रूज 12:1-2, डैनियल 12:3, फिलिपियन्स 2:13-16, मैथ्यू 5:14-16* और *साम 37:3-9.*

7. हमारी सच्चरित्रता कौन हैं और हमारे माध्यम से दूसरों पर चमकने वाला हमारा प्रकाश कौन है? पढ़ें *2 कोरैंथियन्स 3:16-18* और *इसाइया 60:1-3, इसाइया 45:24, जेरेमिया 23:6 और 1 कोरैंथियन्स 1:30-31.*

उत्तर

1. अच्छा या बुरा, शब्द, जीवन और आस्था।

2. ईसा मसीह को अपने जीवन के केन्द्र के रूप में स्वीकार करें और उनकी गरिमा से हम रूपांतरित हों।

3. ईश्वर का दर्शन

4. हमेशा परमात्मा में आनन्द का अनुभव करें, सौम्यता प्रदर्शित करें, किसी भी बात को लेकर चिन्तित न हों, धन्यवाद दें और प्रार्थना करें, जो भी सत्य, सुन्दर, सही, पवित्र, प्यारा, प्रशंसनीय, सर्वोत्तम और सराहनीय हो उसी के बारे में विचार करें। अपने हृदय में कोई भय न रखें, यीशु को अपना प्रभु बनाएं, हमेशा आशा रखने का कारण तलाशें, शुद्ध अंत:करण रखें, पवित्र (बैपटाइज़्ड) बनें, खुश रहें और अच्छे कार्य करें।

5. प्रभु।

6. ईश्वर को अपने अन्दर पावन आत्मा का सृजन कर दें, प्रभु यीशु पर दृष्टि रखें, जीवन देने वाली वाणी का पालन करें, ईश्वर पर भरोसा रखें, अच्छे कार्य करें, ईश्वर में आनन्द पाएं, अपना जीवन परमेश्वर को समर्पित करें, ईश्वर के समक्ष शांत रहें, चिन्तित और क्रुद्ध न हों।

7. ईसा मसीह

बाइबल अध्ययन 5: मछलियां और पक्षी

बहुत प्राचीन समय में, जल, आकाश, धरती, बीजों, पेड़-पौधों, लताओं, फलों और आकाश में उजाले का सृजन करने के बाद ईश्वर ने कहा: 'पानी मछलियों और अन्य जल-जीवों से भर जाए'। ईश्वर ने कहा और ऐसा ही हुआ। और ईश्वर ने इन सबको शुभ बनाया।

प्राकृतिक जीवन में, गहरे समुद्र में ज्यादातर मछलियां पाई जाती हैं, अनेक रूपों और आकारों वाली मछलियां, जिन्हें कभी उजाले की झलक नहीं मिली। प्राकृतिक जीवन की यही सच्चाई आध्यात्मिक दुनिया में भी लागू होती है क्योंकि ईश्वर ने ही सभी चीजों की रचना की है।

आध्यात्मिक अर्थ में, जहां कहीं भी घोर आध्यात्मिक अंधकार फैला हुआ है, ऐसी जगह ज्यादातर लोगों ने यह सुसमाचार नहीं सुना है कि ईसा मसीह ही उनके नियन्ता प्रभु हैं और वे उन्हें अथाह अंधकार से उबार सकते हैं।

1. लोगों के लिए मछली पकड़ना क्या होता है? पढ़ें *मैथ्यू 4:18-19, ल्यूक 10:1-9, ऐक्ट्स 2:40-41, ऐक्ट्स 5:12-14, ऐक्ट्स 1:8, जॉन 4:39* और *रीवलेशन 12:11.*

2. हम लोगों के लिए मछली कैसे पकड़ सकते हैं? पढ़ें *ऐक्ट्स 14:21, मैथ्यू 28:18-20, मार्क 16:15-18, ल्यूक 24:46-48* और *जॉन 20:21-22.*

प्राकृतिक जगत में, ज्यादातर मछलियों को पकड़ने के लिए एक बेहतर समय आता है। प्राकृतिक जीवन की यही सच्चाई आध्यात्मिक दुनिया में भी लागू होती है क्योंकि ईश्वर ने ही सभी चीजों की रचना की है।

आध्यात्मिक अर्थ में, एक समय होता है चुप बैठने का और एक समय होता है लोगों को प्रभु यीशु के बारे में बताने का। अच्छे समय और मौके को समझने के लिए हमें ईश्वर की बात सुननी होगी और उनके मार्गदर्शन पर निर्भर होना होगा।

3. हम ईश्वर की वाणी को कैसे जानते हैं? पढ़ें *जॉन 10:27, ल्यूक 5:16, 1 सैमुएल 2:18, 1 सैमुएल 3:10, ल्यूक 10:39, जॉन 16:13-14* और *साम 46:10.*

प्राकृतिक जगत में, जब हम गहरे पानी में मछली मारने जाते हैं तो हमारा सामना ऐसे जानलेवा जंतुओं से होता है जो हर चीज निगल जाने को तैयार होते हैं। प्राकृतिक जीवन की यही सच्चाई आध्यात्मिक दुनिया में भी लागू होती है क्योंकि ईश्वर ने ही सभी चीजों की रचना की है।

आध्यात्मिक जीवन में, जब हम संसार के लोगों के लिए मछलियां मारने निकलते हैं तो शैतान एवं अनेक हत्यारे हमारी आस्था को निगल जाने के लिए तैयार बैठे होते हैं। वे हमें प्रभु यीशु में विश्वास व्यक्त करने से रोकते हैं। वे हमें ईश्वर में निष्ठा रखने से रोकते हैं।

4. जब मछली मारने में समस्याएं पेश आती हैं तो उस वक्त के लिए ईश्वर ने हमें क्या-क्या वचन दिए हुए हैं? पढ़ें *हीब्रूज 13:5-6, जॉन 16:33, रोमन्स 8:38-39* और *इसाइया 40:26-31.*

प्राकृतिक जगत में, चील आंधी का सहारा लेकर उसके ऊपर उठकर उड़ती है। प्राकृतिक जीवन की यही सच्चाई आध्यात्मिक दुनिया में भी लागू होती है क्योंकि ईश्वर ने ही सभी चीजों की रचना की है।

आध्यात्मिक जगत में, हमें ईश्वर पर यह भरोसा करने की जरूरत होती है कि वे हमें तूफानों से ऊपर उठने में मदद देंगे।

5. हम तूफानों से ऊपर कैसे उठ सकते हैं? *मैथ्यू 6:25-34, साम 55:22, 1 पीटर 5:7, रोमन्स 5:1-5, हीब्रूज 12:1-3* और *प्रोवर्ब्स 3:5-6*

उत्तर

1. गरीबों को सुसमाचार सुनाना, स्वतंत्रता की घोषणा करना, नेत्रहीनों को दृष्टि दिलाना, अत्याचार के शिकार लोगों को मुक्त करना तथा ईश्वरीय कृपा के वर्ष की उद्घोषणा, ईश्वर का साक्षी बनना।
2. प्रभु यीशु का अनुसरण करना, ईश्वर से प्यार करना, ईसा मसीह की आज्ञा मानना, उनकी भेड़ों की रक्षा करना, धर्मानुयायी बनाना, बपतिस्मा करना, संदेश देना और ईश्वर का साक्षी बनना।
3. प्रभु यीशु का अनुसरण करना, प्रार्थना, प्रभु शिक्षा का प्रसार करना, पवित्र चेतना की मदद से यह जानना कि उसकी वाणी को हम कैसे जानें, प्रभु यीशु के चरणों में बैठना और उनकी उपस्थिति में शांति का अनुभव करना।
4. परमेश्वर हमें कभी अकेला नहीं छोड़ेगा, वह हमें कभी नहीं त्यागेगा, प्रभु यीशु ने संसार पर विजय प्राप्त की है और ऐसा कुछ भी नहीं है जो हमें उनके प्रेम, शक्ति और क्षमता से वंचित कर सके।
5. चिन्ता न करना, सबसे पहले ईश्वर के साम्राज्य को पाने की कोशिश करना, सभी चिन्ताएं ईश्वर पर डाल देना, शांति का अनुभव करना, कठिनाइयों से निकलना, ईसा मसीह पर अपनी दृष्टि केन्द्रित रखना और परमेश्वर में विश्वास रखना।

बाइबल अध्ययन 6: राजा एवं पुरोहित

बहुत प्राचीन समय में, ···जल···आकाश···धरती···बीजों···पेड़-पौधों···लताओं···फलों··· आकाश में उजाले, हवा में उड़ने वाले पक्षियों, पानी में विचरण करने वाली मछलियों और जीव-जंतुओं का सृजन करने के बाद ईश्वर ने कहा कि मैं अपनी ही छवि के अनुरूप मानव जाति की रचना करूं, स्त्रियों और पुरुषों की, और उन्हें सभी प्राणियों पर शासन करने वाला बनाऊं। ईश्वर ने कहा और ऐसा ही हुआ। और ईश्वर ने इन सबको शुभ बनाया।

*ईश्वर ने अपनी सर्वश्रेष्ठ रचना के बारे में कहा कि वह अच्छा है ... और जब ईश्वर ने स्त्री और पुरुष की रचना की तो उसने कहा कि वे **उत्तम** हैं।*

प्राकृतिक जीवन में, ईश्वर ने स्त्री और पुरुष की रचना इसलिए की कि वे विश्व पर शासन करें।

प्राकृतिक जीवन की यही सच्चाई आध्यात्मिक दुनिया में भी लागू होती है क्योंकि ईश्वर ने ही सभी चीजों की रचना की है।

आध्यात्मिक दृष्टि से, ईश्वर ने स्त्री और पुरुष की रचना इसलिए की ताकि वे अपनी ही स्वार्थपरक इच्छाओं और अंधकार की शक्तियों पर शासन कर सकें।

1. ईसा मसीह में हमारी रचना किस रूप में की गई है? पढ़ें *रीवलेशन 1:5-6.*

---

2. ऐसा कब होता है? पढ़ें *रोमन्स 5:17* और *2 कोरैंथियंस 5:14-21.*

---

3. मनुष्य जाति को किन तीन लोभों के बारे में पता है? पढ़ें *1 जॉन 2:16?*

4. मनुष्य जाति को जिन तीन लोभों के बारे में पता है उनसे प्रभु यीशु किस तरह बचते हैं? पढ़ें *मैथ्यू 4:3-11.*

प्राकृतिक जीवन में, स्त्री और पुरुष की रचना करने से पहले ही ईश्वर ने वे सभी चीजें बनाईं जिनकी उन्हें जरूरत थी। स्त्री-पुरुष को उत्पन्न करने से 3 दिन पहले, ईश्वर ने उनके भोजन के लिए पेड़-पौधे और फल बनाए। प्राकृतिक जीवन की यही सच्चाई आध्यात्मिक दुनिया में भी लागू होती है क्योंकि ईश्वर ने ही सभी चीजों की रचना की है।

आध्यात्मिक जीवन में, ईश्वर ने हमें शासन करने के लिए तमाम चीजें दी हैं। उन्होंने मृत्यु और बीमारी पर ईसा मसीह की विजय और पवित्र चेतना की पुनर्जीवन शक्ति दी है।

5. अपनी सांसारिक कामनाओं पर शासन करने के लिए ईश्वर ने हमें क्या चीजें दी हैं? पढ़ें *टाइटस 3:5-7, 1 जॉन 3:9, रोमन्स 8:9-11* और *गैलेटियन्स 5:24-25.*

6. हमारी तमाम मानवीय आवश्यकताओं के लिए क्या पर्याप्त है? पढ़ें *2 कोरैंथियन्स 12:9* और *रोमन्स 5:1-5.*

7. हमें धरती पर शासन करने की शक्ति क्यों दी गई है? पढ़ें *साम 8:1-9, इफीसियंस 4:11-16, मैथ्यू 20:25* और *इफीसियंस 2:4-10.*

प्राकृतिक जीवन में, राजसी वंश के व्यक्ति का लोगों पर प्रभाव हो सकता है और उसे जनता का समर्थन मिल सकता है। प्राकृतिक जीवन की यही सच्चाई आध्यात्मिक दुनिया में भी लागू होती है क्योंकि ईश्वर ने ही सभी चीजों की रचना की है।

आध्यात्मिक जीवन में, जब हम परमेश्वर के परिवार के अंग होते हैं तो उन्होंने हमें अपने नाम के प्रयोग करने का अधिकार दिया है। एक ऐसा नाम जो सभी नामों से ऊपर है – प्रभु यीशु।

8. हम शैतान तथा अंधेरी शक्तियों पर कैसे विजय पाते हैं? पढ़ें *इफीसियंस 6:10 17 मार्क 16:17, ऐक्ट्स 3:1-7, ऐक्ट्स 4:30-31, साम 103:1-5 और रीवलेशन 12:7-12.*

9. इस लोक में और वर्तमान में हम विजयी होकर कैसे रह सकते हैं? पढ़ें *जॉन 14:12-13, फिलीपियन्स 4:12-13* और *रोमन्स 8:37-39.*

10. चर्च, जिसे विजय प्राप्त है, उसके प्रति परमेश्वर ने क्या-क्या वचन दिए हैं?

रीवलेशन 2:7 _____

रीवलेशन 2:11 _____

रीवलेशन 2:17 _____

रीवलेशन 2:26-28 _____

रीवलेशन 3:5 _____

रीवलेशन 3:12 _____

रीवलेशन 3:21 _____

11. उन चार चीजों की सूची बनाएं जिसके लिए संत पॉल ने इफीसियस के संतों के लिए प्रार्थना की और जिनके लिए हम आज दावा कर सकते हैं? पढ़ें *इफीसियंस* 1:18-19.

12. परमेश्वर की करुणा का एक नया प्रकटीकरण प्राप्त करने के लिए पूरा इफीसियंस 1 पढ़ें। ईश्वर ने हमें जो बहुत सी चीजें दी हैं उनकी सूची बनाएं और बताएं कि क्यों।

उत्तर

1. परमेश्वर और परमपिता की सेवा के लिए राज्य और पुरोहित के रूप में।

2. जब हमें परमेश्वर की करुणा और सच्चरित्रता का उपहार मिलता है।

3. दैहिक लालसा, बाहरी नेत्रों का आकर्षण और जीवन का अभिमान।

4. शास्त्रों के सही अर्थ और सही प्रसंग की घोषणा करके।

5. पवित्र चेतना जो कि प्रभु यीशु की चेतना और उनका बीज भी है।

6. उनकी करुणा।

7. शत्रु और प्रतिशोधकर्ता को चुप करने के लिए, परमेश्वर के कार्यों पर साम्राज्य स्थापित करने के लिए, प्रभु यीशु के शरीर को अलंकृत करने के लिए। प्रभु यीशु जैसी सम्पूर्णता प्राप्त करने के लिए। उनकी अपार गरिमा दिखाने के लिए।

8. ईसा मसीह के नाम से बोलकर और आरोग्य प्रदान करके। प्रार्थना करके। ईसा मसीह की शक्ति की घोषणा करके।

9. ईसा मसीह में विश्वास प्रकट करके।

10. जीवन के वृक्ष से आहार प्राप्त करना। दूसरी मृत्यु से दुखी न होना। निगूढ़ व्यवहारों का भक्षण। सभी राष्ट्रों पर (आध्यात्मिक) शक्ति। धवल वस्त्र से आभूषित तथा जीवन की पुस्तक से मिटाया न जाना। ईश्वर के मंदिर में एक स्तंभ के रुप में होना। ईश्वर के साथ उसके राजसिंहासन पर आसीन होना।

11. विवेक के नेत्रों का खुलना। उनकी पुकार की आशा को समझना। परमेश्वर के उत्तराधिकार की गरिमा की सम्पदा। हमारे प्रति परमेश्वर की शक्ति की महानता।

12. स्वर्गिक स्थानों में हर आध्यात्मिक आशीर्वाद। ईसा मसीह द्वारा पुत्र के रूप में स्वीकार किया जाना। स्वीकृति। मुक्ति। पापों के प्रति क्षमा। सब चीजें ईसा मसीह में समाहित। पवित्र चेतना। विवेक की चेतना तथा परमेश्वर की पुकार की आशा को समझने के लिए परमात्मा के ज्ञान का प्रकटीकरण। जीवन। प्रेम। उसकी करुणा की असीमता दर्शाना। ईश्वरीय गृह से उत्पन्न शांति। करुणा। ईसा मसीह के शरीर की रचना के लिए उपहार। अच्छाई। सच्चरित्रता। सत्य।

बाइबल अध्ययन 7: ईश्वर का विश्राम

बहुत प्राचीन समय में, प्रकाश, जल, आकाश, धरती, बीजों, पेड़-पौधों, लताओं, फलों, आकाश में उजाले, हवा में उड़ने वाले पक्षियों, पानी में विचरण करने वाली मछलियों, जीव-जंतुओं और मानव जाति का सृजन करने के बाद सातवें दिन ईश्वर ने विश्राम किया। ईश्वर ने इसे आशीर्वादित किया और उसे पावन बनाया।

ईश्वर की विश्रांति में रहने के लिए हमें ईसा मसीह में विश्वास करने की जरूरत है। अच्छी बात यह है कि इस विश्वास की शुरुआत तभी हो जाती है जब हम ईसा मसीह को अपना प्रभु और उद्धारकर्ता मान लेते हैं।

1. हम किस तरह ईश्वर की विश्रांति में प्रवेश कर सकते हैं? पढ़ें *जॉन 6:29, मैथ्यू 11:28-29, साम 91:1-2* और *हीब्रूज 4:14.*

ईश्वर के विश्राम में निवास करने के लिए उनमें आस्था रखने की जरूरत है। अच्छी बात यह है कि इस आस्था की शुरुआत तभी हो जाती है जब हम परमेश्वर को उनके पुत्र ईसा मसीह के माध्यम से जान जाते हैं।

2. ईश्वर में आस्था रखने का क्या अर्थ है? पढ़ें *फिलिपियंस 1:6.*

3. जोशुआ उन चंद लोगों में से था जिसे इज़िप्ट की यातना से मुक्ति मिली थी और जिसने परमात्मा की प्रतिज्ञापित भूमि में प्रवेश किया था। परमात्मा की प्रतिज्ञापित भूमि किस चीज का प्रतिनिधित्व करती है? पढ़ें *हीब्रूज 4:1, ड्यूट्रोनॉमी 12:9* और *जेनेसिस 2:2.*

4. हम यहीं और इसी वक्त इस विश्राम में प्रवेश कर सकते हैं लेकिन भविष्य से भी सम्बंधित विश्राम है। उनमें से कुछ की सूची बनाएं। पढ़ें *हीब्रूज 11:16, जॉन 14:2-3, रीवलेशन 7:15-17* और *2 टिमोथी 4:7-8.*

5. जोशुआ ने क्या करना पसन्द किया? पढ़ें *नम्बर्स 14:6-9.*

6. खास तौर पर हर बार युद्ध से पहले, ईश्वर ने जोशुआ को क्या करने को कहा? पढ़ें, *जोशुआ 1:6-9.*

7. यह किसका युद्ध है? पढ़ें *सैमुअल 17:47* और *कॉलोसियंस 2:11-15.*

ईश्वर के विश्राम में रह पाने के लिए निष्ठा की जरूरत है। अच्छी बात यह है कि इस निष्ठा की शुरुआत ईश्वरीय वाणी को सुनने से होती है।

8. ईश्वर के विश्राम में रहने के लिए किस चीज की जरूरत होती है? पढ़ें *हीब्रूज 4:1-5.*

9. अपने शब्दों में लिखें कि आपके लिए निष्ठा का क्या अर्थ है? पढ़ें हीब्रूज *11:1.*

ईश्वर की विश्रांति में रहने के लिए ईश्वर के प्रति आज्ञाकारी होने की जरूरत है। अच्छी बात यह है कि आज्ञाकारिता की शुरुआत परमेश्वर के प्रेम का निःशुल्क उपहार प्राप्त करने से होती है।

10. ईश्वर के विश्राम में प्रवेश करने का मतलब किस चीज से विश्राम पाना है? पढ़ें *हीब्रूज 4:6-11.*

11. जब हमें प्रभु यीशु के बारे में पता चलता है और हमें उनकी कृपा प्राप्त होती है तो हमारे जीवन में क्या होता है? पढ़ें *2 कोरैंथियंस 3:16-18* और *कॉलोसियंस 2:2.*

उत्तर

1. ईसा मसीह में आस्था रखें जो परमात्मा की ओर से भेजे गए थे। पाप-स्वीकृति में दृढ़ बनें। 'सर्वोच्च' के निगूढ़ स्थल में निवास करें। ईश्वर में विश्वास रखें।

2. परमात्मा की निष्ठा में आत्म-विश्वास रखना।

3. विश्राम।

4. परमात्मा के आवास में रहना। जहां ईसा मसीह वहीं हम। सच्चरित्रता का मुकुट ग्रहण करना। भूख और प्यास की लालसा से मुक्त होना। ईश्वर हर आंसू पोंछ देंगे।

5. ईश्वर में भरोसा रखना।

6. दृढ़ और साहसी बने रहना।

7. परमात्मा का।

8. ईसा मसीह में आस्था।

9. आस्था यह विश्वास है हम जिस बात की आशा करते हैं वह वास्तव में घटित होगा।

10. अपने कार्य से।

11. गौरव के शिखरों पर क्रमश: चढ़ते हुए हम ईसा मसीह की तरह बन जाते हैं। उनके साथ प्रेम में एकरस हो जाते हैं।